आज की शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिकता का समावेश आवश्यक : राजयोगिनी डॉ निर्मला दीदी जी

आबू पर्वत,ज्ञानसरोवर,३१मई२०१४। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं इसकी भगिनी शाखा आर ई आर एफ के शिक्षा प्रभाग द्वारा एक अखिल भारतीय महा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस महा सम्मेलन में बड़ी संख्या में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों सहित अनेक महाविद्यालयों के प्राचार्यों तथा प्राध्यापकों ने भाग लिया। महा सम्मेलन का उद्घाटन दीप प्रज्वलित करके संपन्न किया गया। 'मूल्यों एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा, विषयक इस महा सम्मेलन की आज के वर्तमान परिवेश में आवश्यकता महसूस की गई और इसका आयोजन संपन्न हुआ। अतिथियों के स्वागत में पुष्प गुच्छ प्रदान किये गये एवं मधुर वाणी ग्रूप ने सुंदर गीत भी प्रस्तुत किया।

ज्ञानसरोवर की निदेशक राजयोगिनी ब्र.कु.**डॉ निर्मला दीदी** जी ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। आपने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आज की शिक्षा प्रणाली सर्टीफिकेट देती है पर जीवन जीने की कला नहीं सिखाती। लोग भौतिकवादी होते जा रहे हैं। हर तरफ अपराध, हिंस, भ्रष्टाचार का बोलबाला है। अपना भारत कभी सोने की चिडियाँ था। आज हम घोर अधोगति को प्राप्त हो चुके हैं। क्या क्या अपराध नहीं हो रहे? मानव आज मानव नहीं रहा। दानव बन गया है। सुधार के लिये यह आध्यात्मिक शिक्षा ही कारगर हो सकती है। पहले गुरुकुल में साधारणता से रह कर महानता प्राप्त की जाती थी। विनम्रता जीवन में आती थी। आज तो जैसे किसी का कोई सम्मान नहीं रह गया है। भारत की हालत अत्यंत दुखद है। इसमें सुधार के लिए ईश्वर की लीला यहाँ जारी है। उस ईश्वरीय लीला को समझ कर अपना एवं संसार का कल्याण करना है। आध्यात्मिकता को अपनाना है। मॉ बाप एवं गुरूजन जब मूल्य आधारित बनेंगे तो बच्चे भी सुधरेंगे एवं संसार भी सुधरेगा। बड़ों अर्थात उम्रदराज लोगों को आध्यात्मिकता की शिक्षा लेनी होगी। वे सुधरेंगे तो संसार सुधरेगा। योगाभ्यास काफी आवश्यक है। राजयोग श्रेष्ठ है।

श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय तिरूपति की कुलपति **प्रो.एस रत्ना कुमारी** जी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रकट किये। आपने कहा कि मुझे लग रहा है कि अन्य लोगों के जीवन का प्रकाशित करने के लिए पहले मुझे स्वयं का जीवन प्रकाशित करना होगा। इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में हमें इस प्रकार से प्रशिक्षित किया जाएगा। मुझे गर्व है कि यह संस्थान ऐसा कर पाने में सफल है। हम सभी शक्तियाँ तो चाहते हैं मगर उसके पहले स्वयं को शांत एवं पवित्र बनाने के बारे में नहीं सोचते। भारत और दुनियाँ में हर तरफ भ्रष्टाचार है। हम सभी को इसका अनुभव है। ऐसा इसलिये है कि आज लोग जानते नहीं कि शांति पूर्ण जीवन का अर्थ क्या है? उन्हें मूल्यों के बारे में पता नहीं है। बच्चों को बचपन से ही मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिये। माताएं इसमें महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती हैं। शिक्षा में मूल्यों एवं आध्यात्मिकता का समावेश परमावश्यक है। ब्रह्माकुमारीज इसमें सहयोगी बन सकेगी। हमें इसका लाभ लेना चाहिये।

कुलपति, सी डी एल विश्वविद्यालय सिरसा के **प्रो.राधे श्याम शर्मा** जी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने उद्गार इन शब्दों में प्रकट किये। आपने कहा : बड़ा सौभाग्य है कि आप सभी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़े हैं। विश्व तनाव ग्रस्त है। यह अनूठा विश्वविद्यालय ऐसा है जहाँ मन नियंत्रित होता है, शांत होता है। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज को अशेष साधुवाद। इन्होंने आज प्रातः के सत्र में बताया कि मन जो आत्मा का अंग है वह सर्वाधिक गतिशील है। इसे सही दिशा देना है। इसके लिए आध्यात्मिकता की जरूरत है। यह मूल्य आधारित शिक्षा हम शिक्षक विद्यार्थियों को दे पाएंगे मगर पहले हमें वह अपनाना होगा। सोच में सकारात्मकता को लाकर हम विश्व को बदल सकेंगे।

ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष एवं ब्रह्माकुमारीज संस्थान के कार्यकारी सचिव **राजयोगी ब्र.कु.मृत्युंजय** जी ने भारत के पूर्व प्रधान मंत्री नरसिंहाराव जी के एक भाषण को याद करते हुए बताया कि उन्होंने कहा था कि चरित्र निर्माण का काम ब्रह्माकुमारीज द्वारा किया जा रहा है जब कि भारत सरकार ऐसा कर पाने में विफल रही है। हमारी संस्था इस संसार को मूल्यों का प्रशिक्षण दे रही है अनेक विश्वविद्यालयों के माध्यम से। मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए आध्यात्मिकता की ही आवश्यकता है। आध्यात्मिकता नामक तत्व ही लुप्त है हमारी शिक्षा प्रणाली से। ईश्वरीय विश्वविद्यालय आज ऐसा कर पाने में सक्षम है। हमारे विभिन्न संस्थान अपना अर्थ खोते चले जा रहे हैं। वहाँ अर्थ का अनर्थ होता चला आ रहा है। देह अभिमाान की पराकाष्ठा होती जा रही है। आज मन अपिवत्र है आत्मा अपवित्र है। ज्ञान वह है जो मन को पवित्र बनाए चरित्र को पवित्र बनाए। मानव का दिव्यीकरण करने वाली शिक्षा ही मूल शिक्षा है। वह है मूल्य एवं आध्यात्मिकता ही शिक्षा। ध्यानाभ्यास (मेडीटेशन) इसके लिए आवश्यक है। हम इसकी शिक्षा यहाँ दे रहे हैं।

ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक एवं पाटन महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य ब्र.कु. **डॉ हरीश शुक्ला** जी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने उद्गार निम्न शब्दों में व्यक्त किये। आपने कहा कि ज्ञान में ही शक्ति है। मगर एक महत्वपूर्ण चिंता है कि हम लगातार गिरावट की ओर क्यों बढ़ रहे हैं? शिक्षक अपना दायित्व कितना पूरा कर पाते हैं? धन तो हम ले लेते हैं विद्यार्थियों से मगर उन्हें हम दे क्या पाते हैं? मेरा मानना है कि हम शिक्षक वृंद भी इस भ्रष्टाचार का कारण हैं। हमें ही उनके जीवन में अब प्रकाश भी लाना होगा। इसके लिये इस आध्यात्मिक क्रांति के इस महायज्ञ में सहयोगी बनने के लिए मैं आप सभी आचार्यों का आह्वान करता हूँ। आप सभी का स्वागत है।

ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजक राजयोगिनी **शीलू बहन** ने सभा को राजयोग का सुंदर और शांतिपूर्ण राजयोग का अभ्यास करवाया। ज्ञानसरोवर की ब्रह्माकुमारी **सुमन बहन** ने कार्यक्रम का संचालन किया। **डॉ आर पी गुप्ता** जी ने सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। ***(रपट : वी के गिरीश, ज्ञानसरोवर)***